"अब ध्यान करो"

पंकज कुमार गुप्ता, जहाँगीर
जलविज्ञान विभाग, आई०आई०टी० रुड़की।

दृश्यों का अवलोकन,
अब श्लोकों में और चित्रों में!!!
धुंधला सा ही पर दिख रहा–प्रलय,
जल से; वायु से; और स्थल से!!
अब ध्यान करो; ये क्या है!!!

रक्त वर्ण हो रही धरा अब,
अपने ही रजवाड़ों से!!
अपनी दामन फाड़ रहे हम,
अपनी ही तलवारों से!!
रो रही हमारी मातृभूमि,
हम से; आप से; और अपने ही रखवालो से!!
अब ध्यान करो; ये क्या है!!!

अपने घर में आज आग लगा,
करते हैं, तन–मन गरम!!
पर्यावरण कभी नजर नहीं आता;
अस्पतालों में निकलता है दम!!
अब ध्यान करो; ये क्या है!!!